Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal

ISSN: 3107-5096(ONLINE)

VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

किला परीक्षितगढ़ एवं बहसूमा रियासत संक्षिप्त इतिहास

कुंवर प्रताप सिंह नागर
(सचिव)
राजा नैनसिंह स्मारक समिति–बहसूमा, मेरठ

''सम्वत् 1145 में गुर्जर प्रतिहार वंश के राजा तुंग पुत्र राजा अनंगपाल के दो पुत्र हुए। (1) राजा नगहपाल नागर (2) राजा विशम्बर सिंह नागर जो नीम का तिगाँव (हरियाणा प्रान्त) से चलकर बहसूमा आ गए। इसी स्थान को पुनः आबाद किया। इस स्थान का नाम बहसूमा किया गया। यह स्थान महाभारत काल से विरान पड़ा था।''

राजा जैत सिंह नागर

कुँवर जैत सिंह मुगल सेनापति बल्ले सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। जैत सिंह का जन्म लगभग वर्ष 1711 ई० में हुआ था। बल्ले सिंह की मृत्यु के समय जैतसिंह 2 माह के थे। नीम का तिगाँव ओर बम्बाबड़ दिल्ली सल्तनत के निकट होने के कारण कुंवर बल्ले सिंह की पत्नी तेजकौर ने अपने छोटे पुत्र नवजात शिशु जैत सिंह को लेकर बहसूमा की ओर प्रस्थान किया। चूंकि बहसूमा में पहले से परिवार रहता था और दिल्ली सल्तनत से दूर था। जब माता तेजकौर ''नीम के तिगाँव'' से बहसूमा को जा रही थी। तो रास्ते में (सैफपुर) गाँव पड़ा था। यहाँ पर माता तेजकौर को अंधेरा हो जाता है। बहसूमा कुछ मील दूर था। रात्रि विश्राम (मीर कासिम सैयद के यहाँ माता रूकी थी) सैयद मीर कासिम ने माता तेजकौर का आदर भाव किया। तभी माता तेजकौर उनके परिवार के साथ जंगल में काम करने चली गई थी। नवजात शिशु कुंवर जैतसिंह को भी अपने साथ ले गई। दोपहर के समय वृक्ष के नीचे लेट रहे। कुंवर जैतसिंहपर (धूप) आ गयी थी। ''अचानक भगवान शिव के रूप में नाग देवता आये और उनकी छाया कर ली'' परन्तु जब माता ने यह दृश्य देखा तो चिल्लाने लगी। और आसपास की भीड़ इकट्ठी हो गई। और सभी ने भगवान शिव की आराधना की। तब अचानक ''नाग देवता'' अदृश्य हो गये। इस दृश्य से यह प्रतीत होता है कि कुंवर जैतसिंह (असाधारण–नवजात शिशु थे) जब कुंवर जैतसिंह ने बहसूमा में बड़े होकर। मुगल सल्तनत के खिलाफ जन आन्दोलन किया। और उन्होंने यमुना–गंगा के खादर में रहकर संघर्ष किया। मुगल सल्तनत ने कुंवर जैतसिंह से युद्ध करने के लिए सबसे पहले मुगल सल्तनत सेनापति– प्रताप सिंह राजपूत को सेना लेकर भेजा। इस युद्ध में राजा जैतसिंहकी विजय हुई। प्रताप सिंह राजपूत मारा गया। बाद में मुगल सल्तनत ने दूसरे सेनापति कुंवर हैदरअली को जैतसिंह का मुकाबला करने के लिए भेजा।

जैतसिंह :– परन्तु कुंवर जैतसिंह यह युद्ध भी जीत गए। कुंवर हैदरअली इस युद्ध में मारे गये। दिल्ली बादशाह मौहम्मद शाह घबरा गए और सन्धि करने को मजबूर हो गये। अन्ततः राजा जैतसिंह को किला परीक्षितगढ़ का राजा घोषित किया गया। राजा जैतसिंह ने परीक्षितगढ़ के नये किले का निर्माण किया। जिसे आज भी किला परीक्षितगढ़ कहते हैं। लगभग 17 मार्च 1780 ई० को होली के दिन (पूर्णिमा) को संसार से विदा हो गये थे। बैसाक पूर्णिमा के दिन गाँव नीम के तिगाँव में पैदा हुए थे। इसलिए आज तक गुर्जर समाज अर्थात नागर वंश उनके सम्मान में होली के दिन पक्का पकवान नहीं बनाते हैं। सादे चावल से होली का पूजन करते हैं।

राजा गुलाब सिंह :– राजा जैतसिंह के चचेरे भाई गुलाब सिंह को कार्यभार सौंपा था। अपने सगे भाईयों को राज्य का कार्यभार नहीं दिया था। अन्य सेना का कार्य दिया था। राजा गुलाब सिंह भी वृद्ध हो चुके थे।

राजा नैनसिंह :– राजा गुलाब सिंह के सात पुत्र थे। कुंवर नैनसिंह तीसरे नम्बर के पुत्र थे। इन्होंने पंजाब में जाकर सिक्ख धर्म अपनाया था। इसलिए राजा गुलाब सिंह इन्हीं को राजा बनाना चाहते थे। मुगल सल्तनत से इनको राजा घोषित कराया। राजा नैनसिंह ने सिक्ख धर्म का प्रचार किया। स्वयं सिक्ख धर्म को मानते थे। जैन धर्म दिल्ली के सेठ हरसुखराय जैन ने राजा साहब के मित्र शाहपुर निवासी शाहमल प्रसाद जैन के कहने पर हस्तिनापुर में पाँच हजार गज जमीन की भूमि दान दी थी। वर्ष 1801 ई० को स्वयं दिगम्बर जैन मन्दिर की नींव रखी थी।

राजा नत्था सिंह :– वर्ष 1818 ई० को राजा नैनसिंह इस संसार से विदा हो गये थे। राजा नत्था सिंह के बड़े पुत्र नत्था सिंह गद्दी पर बैठा। राजा नत्था सिंह ने अपने राजाओं के सम्मान में (माँ कात्यानी देवी) के मन्दिर का निर्माण कराया। इसमें पाली भाषा शिलालेख लगा। जिसमें मराठों से युद्ध का वर्णन है और पानीपत युद्ध का वर्णन भी है। राजा नत्थासिंह के एक मात्र पुत्री लाड़कौर की शादी ''फुलौरा दौज'' के दिन लण्डौरा रियासत राजकुमार कुंवर खुशहाल सिंह से हुई थी। राजा रामदयाल के पश्चात लण्डौरा के खुशहाल सिंह राजा बने।

रानी लाडकौर :– राजा नत्था सिंह के पश्चात रानी लाडकौर ने बहसूमा कुंवर भागमल सिंह व कुंवर दलेल सिंह को जिम्मेदारी सौंपी थी। किला परीक्षितगढ़ की जिम्मेदारी कुंवर जहाँगीर सिंह को सौंपी थी। जिनके पौदा थे, कुंवर कदम सिंह को जिम्मेदारी दी गई।

रानी लाडकौर :– रानी लाडकौर को भगवान शिव ने दर्शन दिये थे। जब रानी लाडकौर (ब्रिटिश शासन) लार्ड डलहौजी की मिटिंग करके दिल्ली से लण्डौरा जा रही थी। रास्ते में पुरा गाँव पड़ा वहाँ पर रानी का हाथी आगे नहीं बढ़ा तो हाथी उसी स्थान पर सूंड से पृथ्वी पर वार कर रहा था। रानी ने वहीं पर रात्रि का विश्राम किया था। सुबह भगवान शिव ने अदृश्य दर्शन दिये। तभी उसी स्थान पर खुदाई कराई गई। नीचे शिवलिंग प्राप्त हुआ था। रानी ने भव्य मन्दिर निर्माण किया जिससे पुरा महादेव कहते हैं।

कुँवर कदम सिंह :– (10 मई 1857 की क्रान्ति के महानायक)

1857 का विद्रोह सिपाहियों के अंसतोष का परिणाम मात्र नहीं था। वास्तव में यह औपनिवेशिक शासन के चरित्र उसकी नीतियों, उनके कारण कम्पनी के शासन के प्रति जनता के संचित अंसतोष का और विदेशी शासन के प्रति उनकी घृणा का परिणाम था। एक शताब्दी से अधिक समय तक अंग्रेज इस देश पर धीरे-धीरे अपना अधिकार बढ़ाते जा रहे थे और इस काल में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में विदेशी शासन के प्रति जन असंतोष तथा घृणा में वृद्धि होती रही। यही वह असंतोष था जिसका अन्तिम रूप एक जन विद्रोह के रूप में 1857 में उभरा। 1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन की नीतियों और साम्राज्यवादी शोषण के प्रति जन असंतोष को उभारा था।

कुँवर कदम सिंह का जीवन परिचय :– कुँवर कदम सिंह का जन्म 25-10-1831 ई० में बहसूमा रियासत के राजमहलों में हुआ था। राजा नैन सिंह के बड़े भाई जहांगीर सिंह का विवाह खूबड गौत्र में मनीराम की पुत्री रामकौर से हुआ था। जिससे कुंवर देवी सिंह पैदा हुए थे। कुंवर देवी सिंह का विवाह नसीरपुर के रतन सिंह की बेटी प्राणकौर से हुआ था जिससे पुत्र हुआ कदम सिंह। इन्हीं कुंवर कदम सिंह को रानी लाडकौर ने परीक्षितगढ़ का केयरटेकर बनाया था। कुंवर कदम सिंह अविवाहित थे।

1857 की क्रान्ति में कुंवर कदम सिंह का योगदान

कुंवर कदम सिंह ने मेरठ क्रान्ति का नेतृत्व किया। ब्रिटिश शासन में भारत के वायसराय लार्ड कार्नवालिस के पश्चात 1846 ई० में लार्ड डलहौजी गर्वनर जनरल बनकर भारत आये थे। वर्ष 1846 ई० में लार्ड डलहौजी गर्वनर जनरल थे। वे गुर्जर जाति के लिए सबसे खतरनाक सिद्ध हुए। 31 अक्टूबर 1846 ई० को उन्होंने एक कानून बनाया। जिसे (लौजीलेकसी एक्ट) कहा जाता है। इस कानून के तहत किसी हिन्दू को ईसाई बन जाने पर उसे पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकारी के साथ तिगुनी सम्पाि दी जाती थी। दूसरे कोई भी ईसाई किसी भी हिन्दू सम्पत्ति में मनमाने ढंग से अधिकार पा सकता था। भारी जन विरोध के बावजूद 29 अप्रैल 1850 ई० को इस कानून को लागू कर दिया गया। इस एक्ट के अनुसार डलहौजी ने किला परीक्षितगढ़ का कुछ भाग तो लण्डौरा रियासत के अधीन करके लण्डौरा कार्यवाहक राजा हरवंश सिंह और राजा रगवीर की सौतेली (माता) कमला बिष्ट आदि के पक्ष में कर दिया। बाकी भाग पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया।

मेरठ के तत्कालीन कलैक्टर आर.एच. डनलप :– आर.एच. डनलप द्वारा मेजर जनरल हैविट को 28 जून 1857 ई० लिखे पत्र से पता चलता है कि राव कदम सिंह मेरठ के क्रांतिकारियों का सरताज थे। पूर्वी परगने क्षेत्र के क्रांतिकारियों के नेता थे। उनके साथ 10 हजार क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया जो कि प्रमुख रूप से बहसूमा, मवाना, हस्तिनापुर रियासत परीक्षितगढ़ क्षेत्र के थे।

''ये क्रांतिकारियों का कफन प्रतीक तौर पर सिर पर सफेद पगड़ी बाँधकर चलते थे। क्रांतिकारियों ने पूरे जिले में खुलकर विद्रोह कर दिया था।'' और परीक्षितगढ़ के राव कदम सिंह को पूर्वी परगने का राजा घोषित किया। राव कदम सिंह व दलेल सिंह और कुंवर पृथ्वी सिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने परीक्षितगढ़ की पुलिस पर हमला बोल दिया। और पुलिस को मेरठ तक खंदेड़ दिया। उसके बाद संभावित युद्ध की तैयारी में रियासत परीक्षितगढ़ किले पर तीनों तोपें चढ़ा दी थी। ये तोपें जब से किले में दबी पड़ी थी। ''रावकदम सिंह बहसूमा परीक्षितगढ़ रियासत के राजा नैनसिंह के भाई का पौत्र था। राजा नैनसिंह के समय रियासत में 349 गाँव थे और इसका क्षेत्रफल लगभग 800 वर्ग किमी मील था। वर्ष 1818 ई० राजा नैनसिंह की मृत्यु के पश्चात ब्रिटिश शासन रियासत पर कब्जा करना चाहते थे। परन्तु इस क्षेत्र के लोग पुनः अपना राज चाहते थे। इसीलिए क्रांतिकारियों ने कदम सिंह को अपना राजा घोषित कर दिया था।

26 जून 1857 ई० को बरेली ब्रिगेड का बिना अंग्रेजी विरोध के गंगा पार दिल्ली चले जाना खुले विद्रोह का संकेत था। जहाँ बुलन्दशहर में विद्रोहियों के नेता बलीदाद खान वहाँ का स्वामी बन बैठा। वही मेरठ के क्रांतिकारियों ने कदम सिंह के नेतृत्व में खुलकर विद्रोह कर दिया।

राव कदम सिंह से निपटने के लिए अंग्रेजों द्वारा खाकी रिसाले का गठन :–

राव कदम सिंह के क्रांतिकारियों एवं मेरठ के क्रांतिकारियों को हालातों पर काबू पाने के लिए अंग्रेजों ने मेजर विलियम्स के नेतृत्व में खाकी रिसाले का गठन किया। इस घटना के बाद राव कदम सिंह ने परीक्षिगढ़ छोड़ दिया। और उन्होंने बहसूमा में मोर्चा लगाया। जहाँ गंगा खादर से उन्होंने अंग्रेजों पर हमला पर हमला बोल दिया और तहसील को घेर लिया। खाकी रिसालें के यहाँ पहुँचने के कारण भयंकर युद्ध हुआ।

20 सितम्बर 1857 :– 20 सितम्बर 1857 को अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया। हालातों को देखते हुए राव कदम सिंह, दलेल सिंह, पृथ्वी सिंह आदि हजारों समर्थकों के साथ गंगा के पार बिजनौर चले गये थे।

राव कदम सिंह के साथ 10 हजार क्रांतिकारियों को फाँसी दी गई :–

5 जनवरी 1858 ई० को राव कदम सिंह आदि ने रंजीतपुर में हमला बोलकर अंग्रेजों के घोड़े छीन लिए। मीरापुर व मुज्जफरनगर पुलिस थाने में आग लगा दी थी। इसके बाद राव कदम सिंह ने हरिद्वार क्षेत्र में मायापुर गंगा नहर चौकी पर हमला बोल दिया। अंग्रेजों बंगले जला दिये थे।

मेरठ के गजेटियर के अनुसार–28 जुलाई 1858 को बहसूमा राज परिवार को सामूहिक फांसी लगाई गई थी। राज परिवार के 55 परिवार के सदस्यों फांसी लगाई गई। परन्तु गजेटियर में, दलेल सिंह, पिथो सिंह, देवी सिंह, भवानी सिंह, दुर्जन सिंह आदि नागर वंश के सभी राज परिवार को फांसी दी गई। बाकी का नाम गोपनीय रखा था। तथा 10 हजार क्रांतिकारियों को फांसी दी थी, मेरठ जा विक्टोरिया पार्क है। ब्रिटिश शासन की जेल थी। इसी जेल में शहीदों को फांसी दी थी। मेरठ की दर्दनाक स्थिति उस समय की जो विश्व की महान क्रान्ति का रूप लिया था।

राव कदम सिंह अलग से 17 सितम्बर 1858 :– राज परिवार के बाद राव कदम सिंह फांसी दी या इंग्लैण्ड ले गये, गोपनीय रखा था।

मैं प्रताप सिंह नागर पूर्व रियासत बहसूमा एवं किला परीक्षितगढ़ अपने महान शासकों को आँसूओं पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। हम राज्य की रक्षा के लिए रक्षाबंधन त्योहार नहीं मनाते हैं।